कक्षा-सातवीं 'हिंदी'

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के

कवि- शिवमंगल सिंह 'सुमन'

प्रस्तुतकर्ता- डॉ. संदीप सिंघल (प्रूडेंस स्कूल, अशोक विहार)

कवि परिचय: शिवमंगल सिंह 'सुमन'

- हिंदी साहित्य में शिवमंगल सिंह 'सुमन' एक प्रसिद्ध नाम है।
- हिंदी साहित्य में प्रगतिशील लेखन के अग्रणी कवि सुमन जी का जन्म 5 अगस्त 1915 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हुआ था ।
- 'सुमन जी' का निधन 27 नवंबर 2002 को हुआ।
- देशभक्ति और स्वाभिमान पर सुमन जी के बोल काफी ओजस्वी रहे हैं।

पूर्वज्ञान पर चर्चा

- भारत को आज़ादी कब मिली?
- हम आज़ाद होना क्यों चाहते थे?
- आपको आज़ादी प्रिय है या गुलामी?
- पक्षियों को आज़ादी क्यों प्रिय है?

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के
एक परिचय

'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' नामक कविता कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्‌वारा रचित है । जिसमें आज़ादी के महत्त्व को पक्षियों की वाणी के माध्यम प्रस्तुत किया है ।

खुले आसमान में उड़ते हुए आज़ाद पक्षी चहचहाते हैं । यदि उन्हें पिंजरे में बंद कर दिया जाए और सोने की कटोरी में पकवान भी दिए जाएँ तो भी वे अपने स्वाभाविक रूप को खो देते हैं ।

वे पिंजरे में यदि गाते भी हैं, तो केवल अपनी आज़ादी को ही पुकारते हैं । यदि सोने के पिंजरे में उन्हें बंद कर दिया जाए तो मुक्त होने के लिए वे अपने पंखों को पिंजरे की तीलियों से टकराकर घायल कर लेते हैं । पिंजरे में उनके लिए ये खुला आसमान, बहता पानी, पेड़ की डाल सब एक सपना मात्र होता है ।

यदि भगवान ने उन्हें उड़ने के लिए पंख दिए हैं तो उन्हें बाँधकर नहीं रखना चाहिए । उन्हें खुले आकाश में छोड़ देना चाहिए ।

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के

बंधन रहित, खुला

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे

पिंजरे में बंद

सोना

कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

कोमल

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे

नीम का कड़वा फल

कहीं भली है कटुक-निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

सोने की कटोरी

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के

सोने की जज़ीरें

स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले

रफ़्तार

बस सपनों में देख रहे हैं
तरू की फुनगी पर के झूले।

पेड़ का सबसे ऊपरी भाग

इच्छाएँ

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील-गगन की सीमा पाने

नीला आसमान

लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

तारे

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के

जिसकी कोई सीमा न हो

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी

जहाँ धरती और आकाश मिलते प्रतीत होते हों

या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

घोंसला

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो

सहारा

तोड़ डालना

लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

परेशान

बाधा, रूकावट

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के (पुनरावृत्ति)

1. पंछी उन्मुक्त गगन में उड़ना चाहते हैं, उन्हें बंधन पसंद नहीं है।

2. पक्षी पेड़ों की फुनगी पर झूलना और तारों को छूना चाहते हैं।

3. पक्षी सीमाहीन क्षितिज तक जाना और स्वतंत्रता चाहते हैं।

4. पिंजरों के बंधनों में वह अपनी स्वाभाविक उड़ान भूल जाते हैं।

5. पक्षियों को सोने की कटोरी में पकवानों से प्रिय नीम की निबोरी लगती है।

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के

बोधात्मक प्रश्न-

प्रश्न- कवि पक्षियों के माध्यम से क्या कहना चाहता है?

(क) उन्हें भरपेट खाना दो

(ख) उन्हें पानी पीने दो

(ग) उन्हें सोने दो

(घ) उन्हें आज़ाद रहने दो

प्रश्न- कनक कटोरी की मैदा से उन्हें कौन सी चीज़ ज़्यादा अच्छी लगती है?

(क) कड़वी निबौरी

(ख) मैदा

(ग) कच्चा आम

(घ) अंगूर

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के

प्रश्न- सोने की सलाखों में पक्षी क्या भूल जाते हैं?

(क) परिवार

(ख) मित्र

(ग) गति और उड़ान

(घ) स्वयं को

प्रश्न- कविता में ‘कनक’ शब्द किस अर्थ में प्रयोग हुआ है?

(क) कंचे

(ख) सोना

(ग) कंकर

(घ) दाना चुगना

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के (पुनरावृत्ति)

1. पंछी उन्मुक्त गगन में उड़ना चाहते हैं, उन्हें बंधन पसंद नहीं है।

2. पक्षी पेड़ों की फुनगी पर झूलना और तारों को छूना चाहते हैं।

3. पक्षी सीमाहीन क्षितिज तक जाना और स्वतंत्रता चाहते हैं।

4.पिंजरों के बंधनों में वह अपनी स्वाभाविक उड़ान भूल जाते हैं।

5. पक्षियों को सोने की कटोरी में पकवानों से प्रिय नीम की निबोरी लगती है।

कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के

हमारा आज का कार्य

बढ़ती हुई आबादी(जनसंख्या) और तकनीकि विकास का हमारे पक्षी-जगत पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? हमें इसे रोकने के लिए क्या उपाय करने चाहियें? विस्तार से एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए।

धन्यवाद

प्रस्तुतकर्ता- डॉ. संदीप सिंघल (प्रूडेंस स्कूल, अशोक विहार)